eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 05, May 2024

# डॉ0 लोहिया का लोकतन्त्र एवं लोकहित सम्बन्धी विचार

**डॉ0 अभिलाष सिंह यादव[1]**

[1]एसोसिएट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान, महामाया, राजकीय महाविद्यालय, धनूपुर, हण्डिया, प्रयागराज

Received: 15 May 2024 Accepted & Reviewed: 25 May 2024, Published : 31 May 2024

## Abstract

डॉ0 राममनोहर लोहिया राजनैतिक चिन्तन एवं लोकतान्त्रिक चिन्तन के प्रणेता थे, जिन्होंने अपने विचारों को जनहित में समाज के समक्ष रखे हैं। डॉ0 राम मनोहर लोहिया जनवादी राजनीतिज्ञ थे उनका जनवाद ही समाजवाद था। वे मानते थे कि समाज के बिना व्यक्ति का और व्यक्ति के बिना समाज का विकास नहीं हो सकता। दोनों परस्पराश्रित हैं। राजनीति प्रशासन को इसी महादृश्टि के लिए सक्रिय बनाती है।

**मुख्य शब्द** – डॉ0 राममनोहर लोहिया, राजनैतिक चिन्तन, लोकतन्त्र एवं लोकहित एवं लोकतान्त्रिक चिन्तन

## Introduction

डॉ0 लोहिया कहते थे कि राज्य करने की नीति बेमतलब है, यहद जन शोषित तथा उपेक्षित है। जन चेतना को उद्बुद्ध करना ही राजधर्म है, राजनीति है। वे राजनीति का कर्मवादी बनाने के पक्ष में अन्त तक कार्य करते रहे। कर्मवाद ही राजनीति की रीढ़ की हड्डी है ऐसे उनकी मान्यता थी।[1]

सिद्धान्त की बुनियाद पर लोक तन्त्र की इमारत खड़ी कर उसमें आम जन का आ श्रय देखने वाले डॉ0 लोहिया सिद्धान्तवादी राजनीतिज्ञ थे, वे ताउम्र अपने सिद्धान्तों पर चले उससे वे रत्ती भर नहीं डिगे और किसी सूरत में अपने सिद्धान्तों से समझौता नहीं किया चाहे उन्हें उससे घाटा ही क्यों न हुआ हो यही कारण है कि अनेकों बार उनके घनिष्ठ मित्र भी उनका साथ छोड़कर अलग हो गये और डॉ0 लोहिया मौन बने रहे, परन्तु उन्होंने कभी गलत समझौता नहीं किया और न ही अकेले रह जाने के परिणाम से कभी घबराये। आज के राजनैतिक संदर्भ में डॉ0 लोहिया के इस विचारधारा की छाया कुछ–कुछ उ0प्र0 के पूर्व मुख्यमंत्री मुलायम सिंह यादव में परिलक्षित होती है। पूर्ण रुप से न सही परन्तु आंशिक रुप में ही सही आज डॉ0 लोहिया के विचारों को यत्र–तत्र चर्चा में लाने वाले मुलायम सिंह देश के कुछ गिने चुने राजनीतिज्ञों में से एक है।

देश में जब भी समाजवादी राजनीति की चर्चा आती है डॉ0 लोहिया का नाम सबसे ऊपर आता है। लोहिया के समाजवाद में न तो कट्रपन था न ही अक्रामकता थी। लोहिया मानते थे कि मार्क्सवादी विचारधारा जहॉ वर्गों को समाप्त करके वर्णों को जन्म देती है फलतः राष्ट्र पतनोन्मुखी होने लगता है। उनकी मान्यता थी कि साम्प्रदायिकता को मिटाया जाय और उसको मिटाने में हिंसा का अवलम्ब न किया जाय।[2] डॉ0 लोहिया भी समाजवाद के माध्यम से जीवन के विभिन्न पक्षों में क्रान्तिकारी परिवर्तन चाहते थे, यद्धपि वे अपने दौर में सामाजिक विषमताओं के जाल को उलट देना चाहते थे, तथापि वे आर्थिक, सांस्कृतिक, भाषिक आदि सभी क्रान्तिकारी परिवर्तनों की अपरिहार्यता की अनुभूति करते थे और स्वस्थ तथा वर्गहीन समाज की संस्थाना पर जोर देते थे।[3]

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 05, May 2024

डॉ0 लोहिया सहज परन्तु निडर, अवधूत राजनीतिज्ञ थे, उनमें संत की संतता, फक्कड़पन, मस्ती, निर्लिप्तता और अपूर्व त्याग–भावना थी, वे चाहते थे कि देश के सामने पूरा सत्य आए और समाज उस पर खुलकर बहस करे तथा समाज जाने कि संसद तथा विधान सभाएं उन लोगों के लिए क्य कर रही हैं, जिनके कारण उनका अस्तित्व है। वे मानते थे कि जनता के राज्य में जनता से कुछ भी छिपाना अलोकतांत्रिक है। डॉ0 लोहिया जब तत्कालीन मंत्रियों से यह सुनते थे कि संसद या विधाान सभा में अमुक बात इसलिए नहीं बताई जा सकती क्योंकि वह बात लोकहित में नहीं है तो उन्हें बहुत बुरा लगता था। डॉ0 लोहिया मानते थे कि ऐसा करके वे लोग लोकतंत्र की भावना को रौंदते हैं। वास्तव में जानकारी देना लोकहित है न कि जानकारी छिपाना। इस प्रकार की छुपी सेंसर–शिप को वह सच्चाई तथा इमानदारी के प्रति दुरभि संधि मानते थे।4 उनकी दृश्टि में वहॉ लोक तन्त्र है जहॉ जन–जन का मन निर्भय है, लोकतन्त्र सामाजिक चेतना का प्रतिफल है परन्तु वे तंत्र को लोक पर भारी नहीं होने देखना चाहते थे। उनका मानना था कि जहॉ तन्त्र प्रभावी हुआ वहॉ लोक उपेक्षित होगा, यह स्थिति अमंगलमय है। शासन लोक संचालित हो और विधान सभा तथा, संसद लोकाभिमुख हो, लोकतन्त्र की हार्दिक अकांक्षा यही है, परन्तु तात्कानिक स्थितियों में लोक पर शासन का अंकुश भारी होते देख वे व्यथित हो आन्दोलित हो उठते थे। राजनैतिक जीवन के अनुभवों ने उन्हें कठोर बना दिया था यही कारण है कि सन् चौंतिस वाला लोहिया युवक होते हुए भी विनयी और सुशील था किन्तु बुढ़ापे के समीप पहुॅचकर वे उग्रपंथी कहे जाने लगे थे। परन्तु उनकी अग्रता आक्रोशित नहीं थी मेधाकृत थी, व्यक्ति स्तर पर नहीं थी समष्टि्गत थी। नेहरु जैसे प्रिय जन की आलोचना, नेहरु व्यक्ति से नहीं, कांग्रेस की नीतियों से थी, क्योंकि कांग्रेस सत्ता में थी और सत्ता का वर्चस्व नेहरु में था। उनकी दृष्टि में नेहरु कांग्रेस और सत्ता दोनों का पर्याय थे, परन्तु डॉ0 लोहिया ने कभी नेहरु के व्यक्तिगत जीवन पर कीचड़ नहीं उछाला। हॉ जिनके कारण देष को नुकासन उठाना पड़ रहा था अथवा भविष्य मे उठाना पड़ सकता है, ऐसी नीतियों के लिए उन्होंने नेहरु की कड़ी आलोचना करने से गुरेज नहीं किया।5 देश का दुर्भाग्य की ओर ले जाते देख वे व्याकुल हो उठते थे और परसुरामीय मुद्रा धारण कर सामने आ जाते थे। डॉ0 लोहिया के अक्रामकता की एक झलक चीनी आक्रमण पर बोलते हुए मिलती है जिसमें उन्होंने कहा था कि ''चीन हमारे देश पर हमला किये हुए हैं, युद्ध चल रहा है फिर भी भारत राष्ट्र संघ में चीन की सहायता के लिए पैरवी करता है। कोई लाडला अपनी मॉ के बलात्कारी के साथ अपनी मॉ की शादी करवाने की इच्छा करे, यह कैसी बात है'' लोहिया के इस कटु बयान से संसद में कुछ सांसदों ने होहल्ला मचाना शुरु कर दिया।7

डॉ0 लोहिया ने सरकार की दाम–नीति, पंचवर्षीय योजना आदि सबकी बखिया उधेड़ दी थी, गुलजारी लाल नन्दा जो उस समय योजना मंत्री थे, ने डॉ0 लोहिया की बहस का जवाब देना शुरु किया बाद में लोहिया ने नन्दा की बहस का उत्तर देते हुए कहा कि उत्तर प्रदेश जैसे गरीब प्रदेश का यह दुर्भाग्य है कि मुझ जैसा निकम्मा आदमी और प्रधानमंत्री जैसा अज्ञानी आदमी इस सूबे का प्रतिनिधित्व यहॉ करते हैं। जब उनकी बहसों की आलोचना करते हुए उनके ऊपर दोषारोपण लगाया जाता था कि वे संसद में ऐसी बातें करते हैं जिनसे अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भारत का सिर नीचा होता है तो डॉ0 लोहिया कहते थे कि ''सत्य के प्रकाशित होने से राश्ट्र का सिर नहीं नीचा होता, संसद तो आइने के समान होना चाहिए जिसमें राष्ट्र का सिर नहीं नीचा होता, संसद तो आइने के समान होना चाहिए जिसमें राष्ट्र का मानस साफ–साफ चित्रित हो।'' जनता के रिश्तों पर बहस करते हुए डॉ0 लोहिया कहा करते थे कि ''मतदाता को चाहिए कि

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 05, May 2024

तवे के ऊपर जैसे रोटी उलटी–पलटी जाती है, इसी तरह सरकारों को भी उलटती–पटलती रहे, ताकि यह यथास्थितिवादी न हो।'' संसद में बोलते हुए उन्होंने कहा था कि जिंदा कौमें पांच साल तक खामोश नहीं बैठती, वह या तो सरकारों को शुद्ध करती है, या उन्हें हटाती है।8

डॉ0 लोहिया केवल घोषणाओं और भाषणों तथा नारों तक ही नहीं सीमित थे वे केवल किताबों व अखबारों एवं रेडियो समाचारों की सुर्खियों तक ही नहीं थे बल्कि जन हित के लिए एक ठोस कार्यक्रम व इन कार्यक्रमों को व्यावहारिक रुप देने की कोशिशे भी की हैं। इसलिए उन्होंने भूमि सेना, सिंचाई सेना, एक घंटा देश के लिए देना, परिवार के आधार पर कृषि व लघु उद्योग, जाति तोड़ो अभियान, स्त्री पुरुष की समानता व चौखम्भा शासन व्यवस्था का विचार इस समाजवादी के व्यावहारिक पक्ष को उजागर करते हैं।9 डॉ0 लोहिया देश में ही नहीं वरन् विश्व स्तर पर हर प्रकार के भेदभाव की समाप्ति के लिए एक ऐसी जमात खड़ी करनी चाहते थे जो जीने के समानाधिकार की संस्थापना कर सके।

किसी का इसलिए अपमान हो कि वह बहुत छोटा है या उसका रंग काला है अथवा वह निर्धन है यह उन्हें कतई पसंद नहीं था।10 डॉ0 लोहिया का मानना था कि सम्मान, न्याय और स्वतंत्रता से परे मनुष्य की कल्पना नहीं की जा सकती है।11 और जब उन्हें काले होने के कारण अमरीका के एक होटल में प्रवेश से वंचित किया गया था, तब उन्होंने उसका विरोध किया, जेल गये, तो गये, परन्तु झुके नहीं। अमरीकी सरकार को अपनी गलती का एहसास हुआ और सरकारी प्रतिनिधि ने उनसे इसके लिए क्षमा मॉगी, तब डॉ0 लोहिया ने कहा था कि मुझसे मांफी मांगने से क्या अभिप्राय? मांफी मांगनी है तो अमरीका का राष्ट्रपति दुनिया के समग्र अष्वेतों से मांगे।12 डॉ0 लोहिया ने विश्वबन्धुत्व, सिविल नाफरमानी, विश्व नागरिकता और विश्व चेतना के बारे में भारतीय चेतना का सही रुप प्रस्तुत किया। डॉ0 लोहिया ने विश्व परिवार की अवधारणा पर बल दिया। वह तो भारत पाकिस्तान तथा अन्य एशियाई देशों को मिलाकर एक महासंघ की कल्पना करते थे।

देश के भीतर जिस प्रकार डॉ0 लोहिया के विचार विभिन्न समस्याओं पर क्रान्तिकारी परिवर्तनों मसलन जातिवाद की समाप्ति, अस्पृश्यता निवारण, समता सिद्धान्त जिसमें नर–नारी समता का विशिष्ट महत्व आम जन की मूलभूत आवश्यकताओं पर जनजागरण का कारण बन रहे थे। लेकिन इन सबके बावजूद डॉ0 लोहिया को आजादी के बाद मिली सत्तात्मक असफलताओं, आक्रोश, सहयोगियों का दुरभि संधियां करना, विरोधों आदि ने उपेक्षा मिश्रित हालातों की अनुभूति करा दी थी जिससे वे उच्च्व जाति के होकर भी निम्न जाति का अहसास कर सकें।13 राजनीति में उनका विरोध होने लगा, साथी अलग होने लगे, समाजवाद के भी दो टुकड़े हुए और सत्ता की राजनीति के लिए नये चिन्हों का इस्तेमाल षुरु हुआ। शनैः–शनैः डॉ0 लोहिया उग्र से उग्रतर हो चले और अपने को विरोध का प्रतीक मानकर अग्रोन्मुख होने लगे थे।

डॉ0 लोहिया यायावरी अन्दाज में जिये थे उनमें बहुत कुछ ऐसा था जो उनको उनके समयकालीन महान व्यक्तियों से अलग रेखांकित करता है। डॉ0 लोहिया लोकतंत्र को जनहित का मूलाधार मानते थे। वे अपने जीवन के अन्तिम चरण में ऐसा आभास करने लगे थे कि देश में राजनैतिक चरित्र संकट में है। धर्म दिशा शून्य है राजनीति व्यवसाय बन चुकी थी और सत्ता, सेवा–लूट बनकर रही गयी थी। दिनों दिन देश पतन की ओर जा रहा था और कोई शक्ति उसे नीचे गिरने से रोक नहीं पा रही थी। वह डरते थे कि क्या होगा इस नवीन सभ्यता का जिसका जन्म स्वयं निगल जाने के लिए ही हुआ लगता है।14

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 05, May 2024

डॉ0 लोहिया के कुछ पत्रों से यह पता चलता है कि वे तत्कालीन राजनीति से छुब्ध और किसी सीमा तक निराष भी हो चुके थे। नीचे दिये गये पत्र के कुछ अंष इस तथ्य की पुष्टि करते हैं।15

प्रेय हल्ली,

आरा

5 जनवरी, 1967

(.....मैं 14 और 15 जनवरी को इलाहाबाद रहूंगा बड़ा संकट का सवाल है। मुझे आजकल राजनीति अच्छी नहीं लगती लेकिन, पूरी दुनिया में कौन सी चीज पूरी अच्छी है और अगर पूरी अच्छी लगने लगे तब केवल पुनरावृत्ति हो।.....)

तुम्हारा
राम मनोहर

डॉ0 लोहिया के पत्रों से यह भी पता चलता है कि वह अन्त में दुविधाग्रस्त थे उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या करें। कौन सा रास्ता अपनायें? क्योंकि वह मित्रों से भी निराश हो चले थे। वह पत्र में लिखते है कि

1. पता नहीं जयप्रकाश ने बात चीत शुरु क्यों की, हिन्दुस्तान की राजनीति बहुत निराधार हो गई है। किन्तु ऐसे समय में ही, समय पर एक आधार वाली पार्टी बहुत कुछ बना सकती है। सअगर उसका आधार सचमुच है।16 (डॉ0 लोहिया के 2 सितम्बर 1957 के पत्र से)

2. सरकार पूरी तरह से पागल हो गयी है (डॉ0 लोहिया के 5 सितम्बर 1958 के पत्र से)

डॉ0 लोहिया का समग्र जीवन उनके गत्युन्मुख चिन्तन की आत्म कथा है। प्रारम्भ से ही वह अपने आस–पास के प्रति बेहद चौकन्ने और सतर्क थे। उनकी संवेदनशीलता तथा सहृदयता की पकड़ अत्यन्त गहरी और तलस्पर्शी थी। उन्होंने अपने में एक साथ चित्रकार, साहित्यकार, आदर्श राजनीतिज्ञ, अर्थशास्त्री, वैज्ञानिक, यायावर, समाजसुधारक, संत व दार्शनिक को जिया है। यह भी इत्तेफाक की बात है कि ऐसे समर्पित और निष्ठावान राजनीतिज्ञ, समाजसेवी महापुरुष को उसके मरने के बाद समादृत किये जाने की पेशकश की जा रही है। काश वह अपने समय में उस स्थान को पा जाता, जिस स्थान को आज दिया जा रहा है, तो मानव समाज के उन्नयन में बहुत बड़ा इजाफा होता।

आज की राजनैतिक उथल–पुथल में डॉ0 लोहिया जी की प्रासंगिकता सर्वाधिक है। क्योंकि उनका स्वदेशी मन जिस कर्तव्यबोध से बंधा था उसमें सत्ता मोह की अपेक्षा जन शक्ति और जन इच्छा को संगठित करने के प्रति विशेष आग्रह है। आज की राजनीति केवल सत्ताभिमुख रहेगी और जन इच्छा तथा जन शक्ति पर आधारित नहीं रहेगी तो हमारे मौलिक अधिकारों की रक्षा नहीं हो सकेगी। डॉ0 लोहिया की प्रसंगिकता इसलिए भी है कि उनकी समाजवादी विचारधारा समस्याओं का केवल विश्लेषण ही नहीं करती, उनका निदान भी प्रस्तुत करती है। उनमें आग्रह है दुराग्रह नहीं। आज के बिखराव वाले वातावरण में डॉ0 लोहिया के विचार देश और समाज को एक सूत्रता में ला सकते हैं क्योंकि उनके चिन्तन में गहराई के साथ कर्म की उर्जा पैदा करने की प्रवृत्ति है। वास्तव में आज भी डॉ0 राम मनोहर लोहिया के बारे में जानने वालों की संख्या बहुत कम है। गांधी आज भी बहुत प्रसिद्ध है, विभिन्न राष्ट्रों के राष्ट्राध्यक्ष/

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 05, May 2024

प्रधानमंत्री/मंत्री/राजदूत भारत यात्रा के दौरान गांधी जी की को श्रद्धांजली देने राजघाट पहुंचना, राजधर्म समझते हैं। देश के नेता उनकी समाधि में जाकर शपथ लेते हैं और यह दिखाने की कोशिश करते हैं कि गांधी जी के असली अनुयायी वहीं है। परन्तु उनमें कितने ऐसे है जो गांधी जी के विचारों को पढ़ा है और समझा है तथा अपने जीवन में उतारने की कोशिश की है, व गांधी जी के सत्य, अहिंसा के प्रयोगों के बारे में उन्हें पता है। 17 इसी प्रकार डॉ0 भीमराव अम्बेडकर की मूर्तियां लगवाने वालों तथा डॉ0 अम्बेडकर को अपनी सम्पत्ति काननें वालों ने क्या कभी डॉ0 अम्बेडकर के दर्षन को पढ़ा या डॉ0 अम्बेडकर के जीवन दर्शन पर चलने की किंचित्र मात्र कोशिश भी की है या उनके विचारों को अपने आचरणों में उतारने का प्रयास किया है। यही बात डॉ0 लोहिया जी पर भी लागू होती है। यद्यपि जयप्रकाश नारायण, आचार्य कृपलानी, जनेश्वर मिश्रा, राजनरायण सिंह, चन्द्रशेखर सिंह, मधुलिमये, मोहन सिंह, मुलायम सिंह यादव आदि मूर्धन्य राजनीतिज्ञों के बाद उत्तर प्रदेश के वर्तमान मुख्यमंत्री युवा समाजवादी अखिलेश सिंह क्या डॉ0 लोहिया के सिद्धान्तवादी राजनीति को जिन्दा रख पायेंगे। जबकि वर्तमान में भ्रष्ट सत्ता की राजनीति है और वह भी अस्थिर तथा चरित्रहीन। कौन किसका विरोधी है आज यह पता नहीं चल सकता, यह राजनीति का घोर संक्रमणकाल है। उ0प्र0 में समाजवादियों की सरकार है, वरिष्ठ साहित्यकार गिरिराज किशोर इस बात पर लिखते हैं कि वर्तमान सरकार से यह आशा तो नहीं की जा सकती है कि वह खांटी समाजवादी सरकार बन कर उभरेगी जैसे कि कांग्रेस ही कहां गांधी वादी बन पायी या ब0स0पा0 ही कितनी अम्बेडकरवादी बन पायी है। केवल मूर्तियॉ लगा देना ही उनके सिद्धान्तों पर चलना नहीं माना जा सकता,18 पर उत्तर प्रदेश के नये युवा मुख्यमंत्री नयी शुरुआत कर रहे हैं इसलिए क्या यह संभव है कि वह डॉ0 लोहिया की मान्यताओं और सिद्धान्तों पर गौर करेंगे। यद्यपि अखिलेश यादव, छोटे लोहिया के नाम से जाने वाले जनेश्वर मिश्रा से व अपने पिता मुलायम सिंह यादव से डॉ0 राम मनोहर लोहिया की सैद्धान्तिक राजनीति सीखी और देखी है। डॉ0 राम मनोहर लोहिया के अनुसार समाजवादी का मतलब होता है जो निजी सम्पत्ति को बढ़ाने के बजाय सामूहिक या मुल्क की सम्पत्ति को बढ़ाने की बात सोचे और करे।

## सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :–

1. लोहिया एक व्यक्तित्व एवं कृतित्व : डॉ0 राम मोहन भटनागर, प्रकाशक–किताबघरदरियागंज–नई दिल्ली 1910, पृ. 178
2. डॉ0 लोहिया का समाजवाद एवं अर्थदर्शन : यतीन्द्र नाथ शर्मा, आराधना ब्रदर्स, गोविन्द नगर, कानपुर, पृ. 142
3. डॉ0 लोहिया एक व्यक्ति एवं कृतित्व : डॉ0 राम मोहन भटनागर, प्रकाशक–किताबघर, दरियागंज–नई दिल्ली, पृ. 157
4. डॉ0 लोहिया एक व्यक्ति एवं कृतित्व : डॉ0 राम मोहन भटनागर, प्रकाशक–किताबघर, दरियागंज–नई दिल्ली, पृ. 17
5. समग्र लोहिया : डॉ0 राजेन्द्र मोहन भटनागर, प्रकाशक–किताबघर गांधी नगर, नई दिल्ली, पृ. 124
6. डॉ0 राम मनोहर लोहिया : लक्ष्मीकान्त वर्मा, प्रकाशक–सूचना एवं जनसंपर्क विभाग उत्तर प्रदेश 1991 पृ. 64
7. डॉ0 राम मनोहर लोहिया : लक्ष्मीकान्त वर्मा, प्रकाशक–सूचना एवं जनसंपर्क विभाग उत्तर प्रदेश 1991 पृ. 65

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 05, May 2024

8. डॉ0 राम मनोहर लोहिया : लक्ष्मीकान्त वर्मा, प्रकाशक–सूचना एवं जनसंपर्क विभाग उत्तर प्रदेश 1991 पृ. 65
9. राम मनोहर लोहिया, मार्क्स, गांधी और समाजवाद : पृ. 461–62
10. सात क्रांतियां : डॉ0 राम मनोहर लोहिया, पृ. 25
11. समग्र लोहिया : डॉ0 राजेन्द्र मोहन भटनागर, प्रकाषक–किताबघर गांधी नगर–नई दिल्ली, पृ. 159
12. लोहिया एण्ड अमरिका मीट : हैरिस वोफोर्ड, पृ. 77
13. समग्र लोहिया : डॉ0 राजेन्द्र मोहन भटनागर, प्रकाशक–किताबघर गांधी नगर–नई दिल्ली, पृ. 160
14. डॉ0 लोहिया व्यक्तिगत एवं कृतित्व : राम मोहन भटनागर, पृ. 363
15. वही
16. डॉ0 लोहिया के 5 सितम्बर 1958 के पत्र से।
17. डॉ0 लोहिया व्यक्तित्व एवं कृतित्व, डॉ0 राम मोहन भटनागर, पृ. 186
18. दैनिक अमर उजाला, नई सरकार और लोहिया, 4 अप्रैल, 2012 पृ. 9